

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा - अष्टम

दिनांक -11- 09 - 2021

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक - पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

**सुप्रभात बच्चों आज झाँसी की रानी कविता के बारे में अध्ययन करेंगे**

झाँसी की रानी कविता अर्थ सहित-  
सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,  
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,  
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,  
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।  
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,  
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,  
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

झाँसी की रानी कविता का अर्थ: प्रथम पद में लेखिका ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के साहस और बलिदान का वर्णन करते हुए कहा है कि किस तरह उन्होंने गुलाम भारत को आज़ाद करवाने के लिए हर भारतीय के मन में चिंगारी लगा दी थी। रानी लक्ष्मी बाई के साहस से हर भारतवासी जोश से भर उठा और सबके मन में अंग्रेजों को दूर भगाने की भावना पैदा होने लगी। 1857 में उन्होंने जो तलवार उठाई थी यानी अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ी थी, उससे सभी ने अपनी आज़ादी की कीमत पहचानी थी।

कानपुर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,  
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,  
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,  
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।  
वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद ज़बानी थी,

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,  
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

झाँसी की रानी कविता का अर्थ: झाँसी की रानी कविता के इस पद में लेखिका ने कहा है कि कानपुर के नाना साहब ने बचपन में ही रानी लक्ष्मीबाई की अद्भुत प्रतिभा से प्रभावित होकर, उन्हें अपनी मुंह-बोली बहन बना लिया था। नाना साहब उन्हें युद्ध विद्या की शिक्षा भी दिया करते थे। लक्ष्मीबाई बचपन से ही बाकी लड़कियों से अलग थीं। उन्हें गुड्डे-गुड़ियों के बजाय तलवार, कृपाण, तीर और बरछी चलाना अच्छा लगता था। रचना, तलवारबाज़ी, लड़ाई का अभ्यास तथा दुर्ग तोड़ना इन सब खेलों में माहिर थीं। मराठाओं की कुलदेवी भवानी उनकी भी पूजनीय थीं। वे वीर होने के साथ-साथ धार्मिक भी थीं।